JAGDISH CHANDRA KE UPNYASON MEIN GRAMYA JIVAN KE PARIVARTIT SWAROOP KA ADHYAYAN

ABSTRACT
Of the Ph. D. Thesis

Submitted to
Jamia Millia Islamia
For the award of the Degree of Doctor of Philosophy

Submitted by
Mukesh Kumar Mirotha

Prof. Mahendra Pal Sharma
Department of Hindi

Department of Hindi
Faculty of Humanities and Languages
Jamia Millia Islamia
New Delhi
May 2012

JAGDISH CHANDRA KE UPNYASON MEIN GRAMYA JIVAN KE PARIVARTIT SWAROOP KA ADHYAYAN

Five Keywords : Upnyas, Jagdish Chandra, Gramya Jivan, Parivartan and Samajik Swaroop

शोध सार

ग्राम्य जीवन विषयक यह शोध जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में अभिव्यक्त परिवर्तित ग्राम्य जीवन के गहन अध्ययन, विवेचन एवं विश्लेषण पर आधारित है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। परिवर्तन के अभाव में किसी भी समाज का जीवन स्पंदनहीन, मृतप्राय हो जाता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति मनुष्य के जीवन में द्रुतगति से परिवर्तन ला रही है। विकास एवं प्रगति के साथ-साथ परिवर्तन की प्रक्रिया भी निरंतर चलती रहती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं भाषिक परिस्थितियाँ देश एवं काल की आवश्यकतानुसार बदलती रहती हैं। ये परिवर्तित परिस्थितियाँ परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान करती हैं। आधुनिक युग की विकसित जीवन-प्रणाली एवं चेतना ने ग्राम्य जीवन को प्रभावित किया है। ग्राम्य जीवन में हो रहा परिवर्तन वर्तमान युग की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। आधुनिकता के विकास के साथ, ग्राम्य जीवन में अनेक परिवर्तनों का संकेत मिलता है। इन परिस्थितियों ने ग्रामीण मानव को कृषि जीवन से भिन्न एक नए जीवन को धारण करने के लिए प्रेरित किया है। इससे ग्रामीण मनुष्य की सामाजिक संरचना के साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति को भी एक नवीन दिशा मिली है।

औद्योगिक क्रांति एवं वैज्ञानिक उन्नति से नगरों एवं महानगरों के साथ-साथ कतिपय गाँवों का भी तेजी से विकास हुआ है। औद्योगिकीकरण ने एक ओर व्यक्ति की सुख-सुविधाओं के साधनों का विकास किया है तो दूसरी ओर व्यक्ति और व्यक्ति के बीच दूरी की भावना का भी प्रसार किया है। औद्योगिक प्रगति ने आर्थिक स्तर पर देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है तो सामाजिक स्तर पर वर्ग-संघर्ष को विकसित किया है। इस असंतुलन के कारण ग्राम्य जीवन में अमीर व गरीब के बीच की खाई और गहरी होती जा रही है। विभिन्न उद्योगों ने ग्राम्य जीवन में व्यक्तियों को रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं तो बेरोजगारी एवं शोषण को भी बढ़ावा दिया है। खेतों में तकनीकी एवं याँत्रिक साधनों के प्रयोग के कारण श्रमसाध्य कार्य अब सरलता से होने लगे हैं। युवा किसान पुत्र कृषि जीवन से दूर भौतिक दुनिया के अंश बनना चाह रहे हैं। इससे उनके जीवन मूल्यों एवं संस्कृति में परिवर्तन होता दिखाई देने लगा है। ग्राम्य जीवन में आधुनिकता एवं नगरीय प्रभावों का प्रवेश होता जा रहा है, इससे उनकी जीवन पद्धति एवं दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। जमींदारों का स्थान पूँजीपतियों ने ले लिया है। शिक्षा के व्यापक प्रसार से रूढ़ियों एवं परम्पराओं के स्थान पर नवीन मूल्य स्थापित हो रहे हैं। ग्राम्य जीवन के परिवर्तित स्वरूप को स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासकारों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से निरुपित करने का प्रयत्न किया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों को देश के बहुस्तरीय परिवर्तनों ने विशेषकर विभाजन एवं विभाजनोत्तर दारुण एवं कटु स्थितियों, चुनाव और लोकतंत्र, व्यापक रूप में विकासचक्र-प्रवर्तन, जनजीवन की राजनीति-केन्द्रीयता और नेतावाद, कमरतोड़ मँहगाई एवं बेकारी, बढ़ती जनसंख्या और भ्रष्टाचार आदि ने प्रभावित किया। इस दौर के उपन्यासकारों ने ग्राम्य जीवन के परिवर्तित स्वरूप एवं समस्याओं को विशेष रूप से चित्रांकित किया है। इन्होंने अपने उपन्यासों में ग्राम्य जीवन को प्रमुख स्थान देकर उसका यथार्थ स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन पर क्रमबद्ध, शृंखला युक्त संगठित उपन्यास लिखकर ग्रामीण मानव की साहित्य में प्रतिष्ठा स्थापित की है। प्रेमचंद ने ग्राम्य

जीवन के प्रत्येक पक्ष की समस्या को देखा है और उसके मूल में अर्थाभाव और दूषित शासन व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था की विषमताओं को स्वीकार किया है। प्रेमचंद परवर्ती उपन्यासकारों ने भी अपनी-अपनी शैली के अनुसार परिवर्तित ग्राम्य जीवन को रुपायित करने का कार्य किया है। अनेक हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में ग्राम्य जीवन पर गहन चर्चा की है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में जगदीश चन्द्र जी का विशिष्ट योगदान रहा है। 'ग्राम्य जीवन' से जगदीश चन्द्र जी का सदैव संबंध बना रहा है इसीलिए वे ग्राम्य जीवन के चित्रण में वहाँ की जिंदगी के सहभोक्ता और भागीदार रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन के भोगे हुए अनुभवों का विशाल जगत उपस्थित है। उनके उपन्यासों में आने वाला गाँव सामान्य न होकर विशिष्ट है। इन गाँवों में परिवर्तन की बयार बहती दिखाई दे रही है। वहाँ का ग्राम्य जीवन परिवर्तन-पथ पर सवार है। वस्तुतः ग्राम्य जीवन से जगदीश चन्द्र जी का विशेष तादात्म्य दिखाई देता है। जगदीश चन्द्र जी के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन के परिवर्तित स्वरूप एवं अनुभूत सत्यों की कलात्मक अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। ग्राम्य जीवन ने जगदीश चन्द्र जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को विराटता और गहनता प्रदान की है। गाँव जीवन के उनके अनुभव उपन्यास रूपी बीजों के माध्यम से उग आए हैं। जगदीश चन्द्र ने परिवर्तित ग्राम्य जीवन का प्रसंगानुकूल चित्रण किया है। अपने ग्राम्य-केन्द्रित उपन्यासों में जगदीश चन्द्र ने यथार्थ के धरातल पर अनुभूति के जीवंत परिदृश्य को प्रामाणिकता के साथ प्रदर्शित किया है।

परिवर्तन समाज में एकाएक उपस्थित नहीं होते हैं। परिवर्तन की एक निश्चित व सतत प्रक्रिया समाज में निरंतर गतिशील रहती है। प्रक्रिया के पश्चात् वह परिवर्तन जिस रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है, वही उसका स्वरूप कहलाता है। इसीलिए शोध प्रबंध में ग्राम्य जीवन की विविध परिवर्तित परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। जगदीश चन्द्र की सामाजिक प्रतिबद्धता में उपर्युक्त परिस्थितियाँ ही प्रेरकतत्त्व बनी है। उनके उपन्यास मुख्यतः ग्राम्य जीवन की

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तित परिस्थितियों का चित्रण करते हैं। उनके उपन्यासों में चित्रित ग्राम्य जीवन का समग्र रूपात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबंध में किया गया है। जगदीश चन्द्र के उपन्यासों के मूल्यांकन की एक नई दिशा एवं ग्राम्य जीवन दर्शन की व्यंजना शोध प्रबंध में करने की कोशिश की गई है।

भारतीय जीवन का व्यापक यथार्थ गाँवों में बिखरा पड़ा है। नगरों में उसका सीमित एवं कृत्रिम रूप ही नज़र आता है। हमारे जीवन और सभ्यता का मूल उत्स कृषि है और उसका विस्तार तथा बुनियादी गहराइयाँ उसी में परिलक्षित होती है।

कृषि संस्कृति की त्रासदीपूर्ण परिस्थितियों से लेकर नवीन आर्थिक संस्कृति के उत्पन्न होने तक के सफर में ग्राम्य जीवन परिवर्तन के रथ पर सवार नजर आ रहा है। इसके परिणामस्वरूप ग्राम्य जीवन में चारों ओर अशांति, संघर्ष, भाग-दौड़ दिखाई दे रही है। ग्रामीण जीवन में मानवीयता, आत्मीयता, सहानुभूति, प्रेम, दया आदि भाव कम होते जा रहे हैं। ग्रामीण मनुष्य भी संत्रास, घुटन, डर, अकेलापन, अजनबीपन, तनाव आदि अनेक प्रकार की मानसिक पीड़ाओं से ग्रस्त होता दिखाई दे रहा है। ग्राम्य जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आदि पक्षों में परिवर्तन हो रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में रचनाकारों की एक ऐसी पंक्ति सामने आई जिसने अपनी सार्थक रचनाशीलता से ग्राम्य जीवन को सामने लाने का प्रयास किया। इन उपन्यासों में चित्रित आधुनिक गाँव के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विविध संदर्भ जीवंत रूप में अंकित हुए है। इन उपन्यासों में भारतीय ग्राम्य जीवन के प्रायः सभी वर्गों, चिंतनाओं एवं भावनाओं का प्रौढ़ता तथा मार्मिकता के साथ अंकन किया गया है। शहरी जीवन की चकाचौंध ने हर वर्ग के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है लेकिन ग्राम्य जीवन की समस्याओं से उपन्यासकार विमुख नहीं है। ग्रामीण जीवन पर आधारित अपने उपन्यासों में उपन्यासकार ग्राम्य जीवन की परिवर्तनता का चित्रण यथार्थ के धरातल

पर पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसे उपन्यासकारों में जगदीश चन्द्र का नाम अग्रगण्य लेखकों में लिया जा सकता है।

सार रूप से अवलोकन करने पर विदित हो जाता है कि जगदीश चन्द्र की औपन्यासिक संवेदना पाठक के मन-मस्तिष्क को पर्याप्त गहराई से स्पर्श करती है। मुख्यतः ग्राम्य जीवन में जो परिवर्तन हुआ है, उसे विश्लेषित करने में जगदीश चन्द्र के उपन्यास पूर्णतया समर्थ नजर आते हैं। जगदीश चन्द्र के समूचे रचना फलक का संक्षिप्त किंतु सारगर्भित आकलन करने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी सृजनशीलता ने हिंदी कथा साहित्य को समृद्ध किया हैं।

शोध विषय को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण शोध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध का लक्ष्य जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में व्यक्त ग्राम्य जीवन के परिवर्तित स्वरूप का आकलन करने के साथ साथ ग्राम्य जीवन के विविध नए आयामों की खोज करना भी है।

प्रथम अध्याय 'जगदीश चन्द्र : जीवन रेखाएँ एवं समसामयिक ग्रामीण परिस्थितियाँ' के अन्तर्गत जगदीश चन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समाज – मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मूल्यांकन किया है। मूलतः यह मूल्यांकन औपन्यासिक यथार्थ के हेतुओं और रचनात्मक हेतुओं की ओर संकेत करता है। इस अध्याय में मैंने यह प्रयास किया है कि जगदीश चन्द्र के वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों और उक्त संदर्भों का रचनाओं से संबंध जोड़कर अध्ययन किया जाए। इसके साथ साथ समसामयिक ग्रामीण परिस्थितियों पर चर्चा की है। ग्राम्य जीवन में परिवर्तन के संदर्भ में तत्कालीन परिस्थितियों के योगदान को भी बताने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय 'जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का परिवर्तित स्वरूप : सामाजिक पक्ष' के अन्तर्गत परिवर्तित सामाजिक जीवन का अध्ययन किया है। गाँव का सामाजिक जीवन द्रुतगति से परिवर्तित हो रहा है। जीवन मूल्यों का संक्रमण, संबंधों में तनाव और विघटन, यौन, दलित, नारी एवं वर्ग चेतना,

संघर्षशीलता, महानगर की तरफ रूख आदि इसके प्रमुख उत्स हैं, जिनके आधार पर इसे विवेचित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया है। गाँवों की सामाजिकता, सामूहिकता एवं पवित्रता नवीन भौतिकता-प्रधान पूंजीवादी दृष्टि के उदय से नष्ट होती जा रही है। ग्राम्य जीवन अपने स्वरूप एवं संवेदना में नवीन भंगिमाएँ प्राप्त कर रहा है।

तृतीय अध्याय 'जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का परिवर्तित स्वरूप : आर्थिक पक्ष' से सम्बन्धित है, जिसके अन्तर्गत उन परिवर्तित आर्थिक स्थितियों एवं बिन्दुओं का आकलन किया है, जिनसे गांव का आर्थिक जीवन प्रभावित एवं परिचालित होता है। आर्थिक परिवर्तन के प्रभावी एवं विशेष सन्दर्भों में आर्थिक दुरवस्था के कारण, पंचवर्षीय योजनाएँ, विकास कार्य, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, नवीन आर्थिक संस्कृति आदि प्रमुख है। महंगाई एवं पूंजीवाद के बढ़ते असर ने ग्राम्य जीवन के सरल प्रवाह को तोड़कर रख दिया है। भूमि सुधारों ने ग्रामीणों में नवीन मानसिकता अर्थात् आर्थिक चेतना का संचार किया है। निम्न एवं उच्च वर्ग, गरीब एवं अमीर वर्ग के मध्य विषमता की खाई बढ़ी है। ग्राम-बाजारों पर भी बाजारवाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

चतुर्थ अध्याय 'जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का परिवर्तित स्वरूप : राजनीतिक पक्ष' से सम्बन्धित है। स्वतंत्रता के पश्चात् ग्राम्य जीवन की राजनीतिक परिस्थितियों में भी परिवर्तन हुआ है। इन परिवर्तनों में ग्रामीण राजनीति, भ्रष्टाचार, अपराध व राजनीति का गठजोड, शिक्षा व राजनीति, सर्वहारा का नया रूप, शोषण के नवीन स्तम्भ आदि प्रमुख है। राजनीतिक चेतना की विविध स्थितियाँ इन विविध सन्दर्भों में रूपायित हुई हैं। राजनीति के बदलते रूप से ग्राम्य जीवन में नयी भाव क्रांति अर्थात् संघर्ष चेतना आयी है और उसके विविध स्तरों ने ग्राम्य जीवन के सामंती तंत्र में विघटन उत्पन्न किया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में राजनीतिक परिवर्तनों का यथार्थ चित्रण करने का प्रयास किया है।

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय में 'जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का परिवर्तित स्वरूप : धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष' पर चर्चा की है। गांव का धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन नवीनताएँ प्राप्त कर रहा है। ग्रामीण धर्म एवं संस्कृति के पुरातन आयाम बदल रहे है और आधुनिक ग्रामीण युवा धर्म की दीवारों को पार करना चाहता है। नवीनता एवं प्राचीनता में टकराव संस्कृति के उदात्त तत्वों को सामने ला रहा है। लोक तत्व व्याप्ति, ग्राम्य संस्कृति का महत्वपूर्ण उपादान माना जाता है। इन परम्पराओं में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। संस्कृतियों की टकराहट एवं कछुआ धर्मिता आधुनिक युवा के मन मस्तिष्क पर प्रभाव डाल रही है। वह धर्म को आस्था की बजाए विवेक के तराजू पर तौलने लगा है। आज का ग्रामीण युवा लोक परम्पराओं के प्रति भी उदासीन नजर आता है।

छठा अध्याय 'जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का परिवर्तित स्वरूप : रचनात्मक सौन्दर्य' से संबंधित है। ग्राम्य परिवेश में हो रहा परिवर्तन ग्रामीणों की भाषा पर भी असर डाल रहा है। इसके लिए नवीन शिल्प की व्यंजना की है। ग्राम्य जीवन पर लिखे गए अपने उपन्यासों में जगदीश चन्द्र भाषा के संरचनागत बदलाव को विवेचित एवं विश्लेषित करते हैं। अपनी शैली से वे ग्राम्य जीवन के परिवर्तित जटिल यथार्थवादी एवं विशिष्ट परिवेश को उद्‌घाटित करने में सफल हुए हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर एक संभावित एवं सकारात्मक निष्कर्ष के साथ शोध का समापन किया है।

संक्षिप्त परिचय

नाम	:	**मुकेश कुमार मिरोठा**
जन्म तिथि	:	01.11.1980
जन्म स्थान	:	ग्राम+पो. – भगवतगढ़, तहसील – चौथ का बरवाड़ा जिला – सवाई माधोपुर, राजस्थान – 322701
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
शिक्षा	:	एम.ए. (हिंदी) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) एम.फिल. (हिंदी) जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
सम्प्रति	:	सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
ई-मेल	:	**mirothamukesh@yahoo.in**